एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 02 (फरवरी, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

गुलाब की उन्नत खेती

*पंकज कुमार मीणा
रिसर्च स्कॉलर, हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट (फ्लोरिकल्चर एंड लैंडस्केपिंग), राजस्थान कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, एमपीयूएटी उदयपुर, राजस्थान 313001, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pankajmeena626@gmail.com

गुलाब को पुष्प जगत में पुष्पों का राजा कहा जाता है। आदिकाल से ही इसे विष्वभर के उद्यानों में उगाया जाता रहा है। सौंदर्य के अलावा गुलाब का औद्योगिक महत्व भी है। इससे प्राप्त इत्र, गुलकन्द, गुलाब जल व षर्बत का उपयोग व्यापक रूप से किया जाता है। इसके अलावा गुलाब की कलमों, पौधों और कटे पुष्पों का उद्योग भी देश-विदेश में अच्छी तरह से स्थापित है। राजस्थान में हल्दीघाटी खमनोर, पुष्कर, चित्तौडगढ़ व जयपुर क्षेत्र में क्रमशः चेती गुलाब, बारहमासी गुलाब, गंगानगरी लाल गुलाब को व्यावसायिक स्तर पर उगाया जाता है। गुलाब की खेती को दो भागों में विभक्त किया गया है। पहले भाग में वे गुलाब लिये गए हैं जिन्हें गृह उद्यानों, बाग-बगीचों की शोभा बढ़ाने व कटे पुष्प प्राप्त करने के लिए लगाया जाता है। दूसरे भाग में वे प्रजातियाँ ली गई हैं जिनकी खेती व्यावसायिक स्तर पर खुले फूल, गुलाब जल, इत्र, गुलकन्द व शर्बत आदि बनाने के लिए की जाती है।

ग्राटेड गुलाब (*Rosa hybrida*)

जलवायु

गुणवत्तायुक्त पुष्प उत्पादन हेतु दिन का तापमान 22-25 डिग्री सेल्सियस तथा सापेक्षिक आर्द्रता 55-60 प्रतिषत की आवष्यकता रहती है। दिन एवं रात के तापमान में 5-7 डिग्री सेल्सियस का अंतर होना चाहिए। अधिक तापक्रम से पुष्पों का रंग फीका पड़ जाता है तथा पंखुड़ियाँ शीघ्र ही बिखर जाती हैं। अच्छे पुष्प उत्पादन के लिए रात्रि का तापमान 15.5 डिग्री सेल्सियस की आवष्यकता होती है।

भूमि

गुलाब के पुष्प उत्तम किस्म के प्राप्त करने के लिये जीवांश युक्त, उचित जल निकास वाली दोमट भूमि जिसके नीचे 2 फुट गहराई तक किसी प्रकार की कड़ी सतह न हो. सबसे उत्तम रहती है। भूमि का पी.एच. मान 6 से 7 के बीच होना अच्छा रहता है।

उन्नत किस्में

लाल : एवन, भीम, हैपीनैस, मिराण्डी, रेडपिचर, रक्त गंधा, ग्लैडियेटर आदि।
गुलाबी : फर्स्ट प्राइज, पिक परफैक्ट, क्वीन एलिजाबेथ, सदाबहार, सुचित्रा, पीटर आदि।
पीला : ऑल गोल्ड, बुकानेर, गोल्डन जॉइन्ट, गोल्डन गेट आदि।
गहरा लाल: क्रिमसन ग्लोरी, कालिया, लाल बहादुर, ओक्लोहोमा, क्रिस्टोफर आदि।
नारंगी : मान्टीजुमा, ओरन्ज सेन्सेसन, पण्डित जवाहर लाल नेहरू, सुपर स्टार, सन फायर, शोला, जेरिना आदि।
रंगीन धारियों वाली : अभिसारिका, केयरलैस लव, मदहोश वैशाली।

प्रवर्धन

गुलाब का प्रवर्धन कलम लगाकर व चश्मा विधि से किया जाता है। मूलवृंत के पौधे कलमों द्वारा तैयार किए जाते हैं तथा तैयार मूलवृत पर उन्नत किस्मों का कलिकायन किया सकता है। मूलवृंत के लिए रोजा इण्डिका ओडोरेटा, रोजा बोरबोनियाना, रोजा मल्टीलोरा एवं रोजा इनवोल्यूक्रेटा प्रजाति सर्वोत्तम हैं। नवम्बर-दिसम्बर महीने में इन किस्मों की कलमों को 25 से 30 सेमी. की दूरी पर क्यारियों में लगा दिया जाता है। तीन-चार महीनों में इनमें जड़ें व शाखाएँ निकल आती हैं और उन पर अगली जनवरी माह में चश्मा चढ़ाया जाता है। चश्मा चढ़ाने के एक से डेढ़ माह बाद जब कलिका फूट जाती है तो मूलवृंत वाले पौधे के ऊपरी भाग को

काट कर हटा देते हैं। इस प्रकार देशी गुलाब का जड़ वाला भाग और उन्नत किस्म गुलाब की कली मिलाकर एक बडेड गुलाब का पौधा तैयार हो जाता है। इसके लिए टी कलिकायन विधि सबसे अच्छी पाई गई है।

क्यारियों की तैयारी

निश्चित आकार की क्यारियों में 50 से 60 सेमी. की गहराई तक खुदाई करें। 10 से 15 दिन जमीन खुली छोड़कर इसकी तीन चार बार गुड़ाई करें। पौधे लगाने का सबसे उत्तम समय अक्टूबर से नवम्बर माह है। गुलाब के पौधे औसतन 75 सेमी. से एक मीटर की दूरी पर लगाये जाते है। प्रत्येक किस्म को अलग-अलग क्यारियों में लगाना चाहिए। पौधे लगाने से पूर्व 30 सेमी.' का गड्ढा तैयार कर पौधा लगाकर हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। पौधा लगाते समय ध्यान रखें कि निरोग व स्वस्थ पौधे ही लगायें तथा कलिकायन किया हुआ भाग भूमि से 15 सेमी. ऊँचा रखें जिससे कलिकायन को हानि न पहुँचे।

खाद एवं उर्वरक

खाद व उर्वरक देने से पूर्व सितम्बर के तीसरे सप्ताह से पानी देना बंद कर देना चाहिए जिससे भूमि सूख जाए। अक्टूबर के पहले या दूसरे सप्ताह में कटाई-छंटाई के तुरन्त बाद पौधे के तने से एक फीट की दूरी से चारों तरफ की मिट्टी को 10-15 सेमी. गहराई तक तथा 45 सेमी. की गोलाई में खुदाई कर निकाल लेते हैं। पौधों को 4 से 5 दिन के लिए ऐसे ही खुला छोड़ देते है, जिससे कि जड़ों की तपाई हो जाए। अब प्रत्येक पूर्ण विकसित पौधे के चारों ओर की खुदी हुई जगह में 10 किलो अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद व 25 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण प्रति गड्ढ़ा मिलाकर भर देवें व गहरी सिंचाई करें। एक-दो सप्ताह बाद 75 ग्राम यूरिया, 125 ग्राम सुपर फॉस्फेट व 35 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधें के हिसाब से पौधे के मुख्य तने से 30 सेमी. की दूरी पर चारों तरफ अच्छी तरह मिलाकर सिंचाई कर देते हैं। जब कलियां बनना प्रारम्भ हो जाये तो 75 ग्राम यूरिया और देवें। उर्वरक मिश्रण घोल के रूप में भी पौधों पर छिड़क कर दिया जा सकता है, इससे पौधों का विकास अच्छा तथा फूल बड़े तथा अधिक संख्या में खिलते हैं। इसके लिए यूरिया 30 ग्राम, अमोनियम फॉस्फेट 30 ग्राम, पोटेशियम सल्फेट 30 ग्राम के मिश्रण की 30 ग्राम मात्रा को 10 लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अन्तर से छिड़काव करें। उपरोक्त खाद व उर्वरक देने के बाद भी कई बार सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के लक्षण पाये जाते हैं। इनमें मैगनीज, मैगनिशियम, लोहा एवं बोरोन आदि मुख्य हैं। इनकी कमी की पूर्ति के लिए 10 ग्राम मैंगनीज सल्फेट, 20 ग्राम मैगनिशियम सल्फेट, 10 ग्राम चिलेटेड आयरन एवं 5 ग्राम बोरेक्स के मिश्रण की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने पर फूल व पत्तियों के रंगों में सुधार होता है। यदि उपरोक्त मिश्रण न बना सकें तो बाजार जार में बनाया हुआ मिश्रण रोजमिक्स नाम से भी उपलब्ध लब्ध है।

सिंचाई

गर्मियों में 7-10 दिन और सर्दियों में 15-20 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहना चाहिए

कटाई-छंटाई

साल में एक बार अक्टूबर माह में कटाई-छंटाई करना आवश्यक है। कटाई-छंटाई के समय पतली, सूखी, रोगग्रस्त और एक दूसरे में उलझी हुई शाखाओं को सबसे पहले काटा जाता है। लता वाले गुलाब में केवल उलझी हुई और पतली शाखाओं को काटकर अलग कर देते हैं। हाइब्रिड टी किस्मों में 3 से 5 मोटी शाखाओं को छोड़कर अन्य सभी को मुख्य तने के पास से काट देते हैं। चुनी हुई शाखाओं में भी 5-6 आँख छोड़कर काट देते हैं। ध्यान रखें कि काटते समय शाखा की अंतिम आँख बाहर की तरफ पड़े। कटाई-छंटाई के तुरन्त बाद कटे भाग पर ब्लाइटॉक्स अथवा बोर्डो पेस्ट का लेप करें। पौधों में निराई-गुड़ाई करते समय कलिकायन के नीचे से फूटी मूलवृंत की देशी फुटान को शीघ्र हटा देना चाहिए।

कीट प्रबंधन

शल्क कीट स्केल: ये कीट टहनियों एवं तने पर भारी मात्रा में चिपके हुए रहते हैं। कीट ग्रसित पौधों पर अवयस्क शल्क पाये जाते हैं। इस कीट के प्रकोप से पौधा कमजोर पड़ जाता है और अधिक प्रकोप की अवस्था में सूख जाता है। नियंत्रण हेतु पौधों को काट कर रोग ग्रस्त भाग को इकट्ठा करके जला देवें। मैलाथियॉन या मिथाइल डिमेटॉन अथवा डायमिथोएट 1 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मोयला : यह कीट पत्तियों, कली व कोमल टहनियों से रस चूसते हैं, फलस्वरूप पौधों की बढ़वार रूक जाती है और फूलों की गुणवत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस कीट का प्रकोप नवम्बर से अप्रैल माह तक अधिक रहता है। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. अथवा डाइमिथोएट 30 ई.सी. एक मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। नीम या करंज तेल का 2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

पर्णजीवी : ये कीट फूलों की पंखुड़ियों से रस चूसते हैं जिससे पंखुड़ियाँ मुड़ जाती हैं। फूल का आकार बिगड़ जाता है। पत्तियों पर सफेद धब्बे दिखाई देते हैं तथा पौधा कमजोर पड जाता है। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. अथवा डाइमिथोएट 30 ई.सी. एक मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

तना छेदक मक्खी : ये गहरे नीले रंग की छोटी मक्खी कटे हुए सिरों में छेद करके अंदर घुस जाती है तथा पूरी टहनी सूख जाती है। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. अथवा डाइमिथोएट 30 ई.सी. एक मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

थ्रिप्स : कीट पत्तियों तथा पंखुड़ियों से रस चूस लेता है इसके कारण पत्तियाँ मुड़ जाती हैं तथा इसमें धारियाँ पड़ जाती हैं। नियंत्रण हेतु मिथाइल ऑक्सीडेमेटान या डाइमिथोएट या ऐसीफेट या इमिडाक्लोरपिड पाँच मिली. प्रति दस लीटर पानी की दर से 2 या 3 बार 15 दिन के अंतराल से छिड़काव करें।

व्याधि प्रबंधन

पाउडरी मिल्ड्यू : पत्तियों की ऊपरी सतह एवं कलियों पर सफेद चूर्ण के धब्बे दिखाई देते हैं या अधिक रोगग्रस्त पत्तियाँ पीली पड़कर झड़ जाती हैं। नियंत्रण हेतु कैराथेन एल.सी., डीनोकेप या कैलेक्सिन एक मिली. प्रति लीटर पानी के घोल का 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें

एन्थैक्नोज : इस रोग के प्रकोप से पत्तियों पर सलेटी गहरे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और रोगग्रसित भाग मुरझा कर सूखने लगते हैं। नियंत्रण हेतु मैंकोजैब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

डाई बैंक : कटाई-छटाई के पश्चात् प्रायः ये रोग टहनियों में लग जाता है। टहनियाँ ऊपर से नीचे की ओर सूखने लग जाती हैं तथा पूरा पौधा सूख कर मर जाता है। नियंत्रण हेतु सूखे भाग को काट कर इकट्ठा ठ्ठा करने के बाद जला दें तथा इसमें बोर्डोक्स मिक्सचर या गुलाब पेंट (कॉपर कार्बोनेट + रेड लेड अलसी का तेल 4:4:5 के अनुपात में मिलाकर) कटी टहनियों के सिरे पर लगा दें।

उपज

प्रति हैक्टयर औसतन 25 से 30 क्विंटल पुष्प प्राप्त होते हैं किन्तु अच्छी फसल होने पर 30 से 40 क्विंटल प्रति हैक्टर तक पुष्प प्राप्त होते है

कट लावर्स के लिए फूलों की कटाई एवं पैकिंग

कट लावर्स हेतु कटाई टहनी समेत की जाती है। फूल की कटाई कली के पूर्ण विकसित होने पर करनी चाहिये इससे फूल पूरा खिला रहता है और काफी समय तक टिक सकता है। फूलो की कटाई सुबह जल्दी या संध्या में करनी चाहिए और काटने के बाद टहनी के कटे भाग को ताजा पानी में डुबा देना चाहिए तथा सिल्वर थायोसल्फेट 100 पी.पी.एम. मात्रा को काम में लेना चाहिए, जिससे फूलों को लम्बे समय तक ताजा रखा जा सके। इस कार्य के लिए प्लास्टिक की बाल्टी का उपयोग करें। जब सभी फूल कट जाये तब टहनियों के कटे भाग को पानी में 2 सेमी. नीचे के भाग को पुनः कट लगाना चाहिए। अगर कटे फूलों को तुरन्त काम में लेना हो तो उन्हे पानी में ठण्डी जगह पर जहाँ 4.4 डिग्री से 7.2 डिग्री सेंटीग्रेट तक तामपान हो, 6 से 12 घण्टे तक रखें जिससे पुष्प कली कठोर हो कर ज्यादा समय तक ताजी रह सके। एक से रंग व लम्बाई वाली टहनियों को एक साथ रखना चाहिए। रखरखाव की सुविधा के लिए टहनी के निचले सिरे से 20 सेमी. तक पत्तियां व कांटें हटा देने चाहिए।

पैकिंग

कटे हुए फूलों को टहनी की लम्बाई, गुणवत्ता एवं किस्म के अनुसार छंटनी करके गत्ते के बक्सों में पैक किया जाता है। बक्से का आकार 100 सेमी. लम्बा, 32.5 सेमी. चौड़ा, व 6.5 सेमी. ऊँचा होता है, जिसमें 65 से 70 सेमी. लम्बी गुलाब की 80 टहनियाँ पैक की जाती हैं। बक्से के अंदर की तरफ प्लास्टिक लगी होती है। बहुत महीन नम टिष्यू पेपर की कतरन को बक्से के दोनों किनारों पर रख देते हैं, जो फूलों के लिए गद्दे का काम करती है। 20-20 टहनियों के बण्डल रबर बैंण्ड से बांध देते हैं तथा किस्म का नाम लिख दिया जाता है। 20-20 टहनियों वाले दो बण्डलों को बक्से में इस तरह रखते हैं कि कलियों वाला हिस्सा बक्से के दोनों किनारों की तरफ रहे। दोनों बण्डलों के दूसरे हिस्से को एक लकड़ी के टुकड़े से दबा कर अच्छी तरह फिक्स कर देते हैं। लकड़ी के नीचे फोम लगा देते हैं जिससे टहनियों को किसी तरह का नुकसान न हो सके। चार बण्डलों को इस तरह रख कर ऊपर टिश्यू पेपर लगाकर ढक्कन बन्द कर चिपकाने वाली टेप से चिपका देते हैं। ऐसे बक्सों का वजन जिनमें 80 टहनियां होती हैं, का कुल वजन 5 से 6 किलो तक होता है। बॉक्स पर पहुँचने वाली जगह का पता लिख देते हैं।